Subject :- Sociology Date :- 25/04/2020
Class :- D-I (H) Paper :- I & Sub. (1)

Topic :- सामाजिक परिवर्तन के रेखीय सिद्धान्त

By :- Dr Shyamanand Choudhary
Marwari College, Darbhanga, 9546791619
Online Study Material No: (19)

सामाजिक परिवर्तन के रेखीय सिद्धान्त प्रतिपादित करने वाले समाजवैज्ञानिकों में अगस्त कॉम्टे हरबर्ट स्पेन्सर हाबहाउस का नाम महत्वपूर्ण है। वास्तव में इस सिद्धान्त के अनुसार एक लम्बी अवधि तक सामाजिक परिवर्तन एक निश्चित दिशा में आगे की ओर होता है। संक्षेप में प्रमुख रेखीय सिद्धान्त निम्नलिखित है :-

1. अगस्त कॉम्टे का सिद्धान्त (Theory of Auguste Comte) → अगस्त कॉम्टे के अनुसार हमारी प्रत्येक अवधारणाएँ हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा - एक के बाद एक तीन विभिन्न सैद्धान्तिक अवस्थाओं से होकर गुजरती है :-

A. Theological Stage (आध्यात्मिक स्तर)
B. Metaphysical ,, (तात्विक ,,) और
C. Scientific ,, (वैज्ञानिक ,,)

स्पष्ट रूप से कॉम्टे के अनुसार मानव समाज का इतिहास आध्यात्मिक अवस्था (Theological Stage) से प्रारंभ होकर एक निश्चित दिशा की ओर बढ़कर तात्विक स्तर (Metaphysical Stage) और अन्त में वर्तमान प्रत्यक्षवादी अवस्था (Positive Stage) तक पहुँचा है।

चिन्तन की प्रथम अवस्था कल्पना या धार्मिकता पर आधारित होती है, इसके पश्चात दूसरी अवस्था में घटनाओं के गुणों की व्याख्या तात्विक आधार पर की जाती है। चिंतन की अन्तिम और तीसरी अवस्था प्रयोग सिद्ध एवं तर्कसंगत ढंग से घटनाओं की व्याख्या करता है। इस स्तर को वैज्ञानिक अवस्था (Scientific Stage) भी कहते है। मानव के बौद्धिक एवं सामाजिक विकास के ही नियम है। स्मरण रहे कि ये तीनो अवस्थाऐं एक ही मस्तिष्क मे अथवा एक ही समाज में, किसी एक समय विद्यमान रह सकती है। कॉम्टे के अनुसार, "इस बात को बड़ी दृढ़ता के साथ मस्तिष्क मे रखने की आवश्यकता है कि अत्यधिक सरल और सामान्य विज्ञानों की दृष्टि से वही मस्तिष्क प्रत्यक्षावस्था में हो सकता है। जो कि अत्यधिक जटिल एवं विशेष विज्ञानों की दृष्टि से दार्शनिक अवस्था में हो

सकता है, सामाजिक विज्ञानों की दृष्टि से धर्मशास्त्रीय अवस्था में हो सकता है।" अन्त में कह सकते हैं कि कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित चिन्तन की तीन अवस्थाओं का यह नियम स्वयं मानव जीवन के विकास के समान है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने बचपन अथवा प्रथम अवस्था में काल्पनिक, युवावस्था में भावुक तथा बुढ़ापे अर्थात् अन्तिम अवस्था में अनुभवी या तार्किक हो जाता है।

2. हरबर्ट स्पेन्सर का सिद्धान्त (Theory of Herbert Spencer) :- स्पेन्सर के सामाजिक उद्विकासीय सिद्धान्त को सावयवी सिद्धान्त (organismic Theory) भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त में उसने समाज को एक सावयव मानकर विवेचित किया है। उसने समाज का उसी प्रकार अस्तित्व स्वीकार किया है, जिस प्रकार एक जीवित प्राणी का। इस सिद्धान्त के अनुसार जिस प्रकार एक सावयव जन्म से मृत्यु तक पहुँचने में अनेक अवस्थाओं को पार करता है, ठीक उसी प्रकार सामाजिक उद्विकास भी विभिन्न अवस्थाओं से गुजर कर निश्चित दिशा की ओर बढ़ता है।

स्पेन्सर के अनुसार समाज का यह विकास सरल से जटिल की ओर एवं समरूपता (Homogenity) से विषमता (Heterogenity) की ओर तथा असम्बद्धता से सम्बद्धता की ओर होता है। इनके अनुसार नयी व्यवस्था पिछली अवस्था की अपेक्षा प्रकार्यात्मक दृष्टि से विशिष्ट होती है। वास्तव में सामाजिक उद्विकास की व्याख्या के सन्दर्भ में स्पेन्सर ने समाज की भिन्न-भिन्न क्रमिक अवस्थाओं एवं परिवार की अवस्थाओं का भी उल्लेख किया है। धार्मिक तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं का भी इसी रूप में विवेचन उसने प्रस्तुत किया है। सत्य तो यह है कि शक्ति व पदार्थ की सत्यता के आधार पर ही स्पेन्सर ने सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट किया है। स्पेन्सर के शब्दों में "यद्यपि समाज के सम्पूर्ण एकीकरण को देखते हुये उद्विकास अपरिहार्य है, परन्तु प्रत्येक विशिष्ट समाज में इसे ऐसा नहीं कहा जा सकता, जिसके बिना काम ही ना चले।" इन्होंने आगे लिखा है कि समस्त पक्षों में समान रचना और कार्यसम्बन्धी असमानताओं से भरपूर सरल जनजाति से ही सभ्य राष्ट्रों का उद्विकास होता है सभी संस्थाएँ प्रारंभ में एक में मिली होती है, लेकिन धीरे-धीरे एक-दूसरे से अलग और

Scanned with CamScanner

विशिष्ट हो जाती है। इसी तरह समाज के हर पक्ष में उद्विकास की प्रक्रिया कार्यरत रहती है।"

3. हाबहाउस का सिद्धान्त (Theory of Hobhouse) → हाबहाउस के अनुसार मानव मस्तिष्क के विकास के साथ ही उसके नैतिक आदर्शों में भी परिवर्तन होता है। वास्तव में हॉबहाउस ने समाज के उद्विकास का चित्रण कुछ प्रगतिशील सन्दर्भ में किया है तथा उसकी मान्यता है कि समाज कुछ वांछित उद्देश्यों की ओर आगे बढ़ता है। उसने अपने सिद्धान्त के समर्थन में मानवशास्त्रीय व ऐतिहासिक आँकड़ों का प्रयोग किया है। हाबहाउस ने अपनी पुस्तक 'मोरल्स इन इवोल्यूशन' (Morals in Evolution) में लिखा है कि समाज में बढ़ती हुई नैतिक चेतना उद्विकास की प्रत्येक अवस्था को संशोधित करके एक इच्छित दिशा प्रदान करती है। हाबहाउस कॉम्टे के रूढ़िवादी प्रत्यक्षवाद का विरोधी था इसलिए उसने अपने सिद्धान्त में मनोवैज्ञानिक तत्वों पर अधिक बल दिया है।

आलोचना
(Criticism)

आज सामाजिक परिवर्तन एक विशेष दिशा की ओर न होकर उतार-चढ़ाव में व्यक्त होता है। रेखीय सिद्धान्त में कॉम्टे के सिद्धान्त की कमी यह है कि उसने समाज के ऐतिहासिक विकास का जो सामान्यीकरण प्रस्तुत किया है, सभी समाजों एवं कालों में सत्य नहीं सिद्ध होता है, फिर भी कॉम्टे द्वारा प्रस्तुत सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित तीन स्तरों का नियम भावी शोध-कार्यों को नयी दिशा प्रदान करता है। हरबर्ट स्पेन्सर द्वारा भी अपने सिद्धान्त में सभी समाजों के लिए एक-सा नियम लागू करना अनुचित है, क्योंकि अनेक जनजातियों में आज आखेट, पशुपालन एवं तीनों व्यवस्थाएं साथ-साथ चल रही हैं। वास्तव में स्पेन्सर का उद्विकासीय सिद्धान्त जितना प्राणीशास्त्रीय निष्कर्षों पर लागू होता है, उतना सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में नहीं। ऑगबर्न ने स्पेन्सर के सिद्धान्त का विरोध करते हुए लिखा है कि "उद्विकास ने वंशानुक्रमण के नियम की उपलब्धि के प्रयास, सामाजिक संस्थाओं के विकास एवं परिवर्तन तथा चयन में थोड़े से ही सार्थक और महत्वपूर्ण परिणाम

(A)

प्रस्तुत किये है।"

हाबहाउस द्वारा प्रस्तुत नैतिक आदर्शों का ऐकीय सिद्धान्त भी अपूर्ण है, क्योंकि उनकी व्याख्या उद्विकासीय न होकर प्रगति से अधिक प्रभावित है। अतः उनके विचार व्यक्तिगत मूल्यों से स्वतंत्र नहीं है। नैडल के शब्दों में "उद्विकास उन सम्बन्धों में से है जो मूर्त रूप से प्रयोग-सिद्ध विधियों से दूर है। उद्विकास के कोई विशिष्ट नियम नहीं है, यदि कोई है भी तो सिर्फ इतना कि उद्विकास होता है।" स्मरण रहे कि परिवर्तन के उद्विकासीय सिद्धान्त चाहे भले ही समाज व संस्कृति में होने वाली सभी परिवर्तनों की भली-भाँति व्याख्या न कर सके, फिर भी समाज के विस्तृत इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। अन्त में ऐकीय सिद्धान्तों की महत्ता के सम्बन्ध में बाटोमोर ने लिखा है कि ऐकीयसिद्धान्तों पर निर्धारणवादी होने का जो आरोप लगाया जाता है, वह ठीक नहीं है। स्पेन्सर, कोम्ट के सिद्धान्तों को अक्सर एक कारकवादी तथा नियतिवादी कहकर निंदित किया जाता है। साथ ही इनका स्पष्टीकरण इसके विपरित है।

Dr. S. N. Choudhary
Guest Teacher, Marwari College
Darbhanga

Scanned with CamScanner